UGC Approved Journal No - 40957

ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

An Interdisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

जिज्ञासा

Chief Editor :

Indukant Dixit

Executive Editor :

Shashi Bhushan Poddar

Editor :

Reeta Yadav

UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 6.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : ***Indukant Dixit***

Executive Editor : ***Shashi Bhushan Poddar***

Editor
Reeta Yadav

Volume 16 **December 2023** **No. IV**

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- स्वतन्त्रता पूर्व भारत में नगरीय शासन का विकास — 326-334
  मनीष कुमार पाण्डेय, शोध छात्र राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर
  डॉ. कृष्णा नन्द चतुर्वेदी, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, स्वामी सहजानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर

- बौद्ध स्थापत्य में स्तूप निर्माण की परम्परा (पूर्वी मालवा के विशेष सन्दर्भ में) — 335-340
  डॉ. सतीश चन्द यादव, वरिष्ठ शोध अध्येता महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, देवास रोड, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में सैय्यद हसन इमाम का योगदान — 341-344
  शशि कुमार, शोधार्थी, इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
  डॉ. प्रीति रंजन, शोध निदेशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, एच.डी. जैन. कॉलेज, आरा, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन — 345-351
  बृजलाल यादव, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ.प्र.
  डॉ. राजेश कुमार सिंह, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ जौनपुर, उ.प्र. सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।

- पर्यावरणीय शिक्षा एवं जनजागरूकता — 352-356
  डॉ. सीमा सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महिला पी. जी. कालेज बस्ती (उ०प्र०) सम्बद्ध सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थ नगर (उ०प्र०)

- समकालीन उपन्यासों में वृद्धों की पारिवारिक समस्याओं का विवेचन — 357-364
  कंचन, शोधार्थिनी, हिन्दी, श.मं.पा. महिला पी.जी. कॉलेज माधवपुरम, मेरठ (उ.प्र.)
  डॉ. स्वर्णलता कदम, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, श.मं.पा. महिला पी. जी. कॉलेज माधवपुरम, मेरठ (उ.प्र.) सम्बद्ध चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ, (उ.प्र.)।

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

बृजलाल यादव*
डॉ. राजेश कुमार सिंह**

शिक्षा एक गतिशील सामाजिक प्रतिक्रिया है जिसके द्वारा वर्तमान आवश्यकताओं के साथ–साथ भावी अपेक्षाओं के अनुरूप नागरिकों का निर्माण किया जाता है। शिक्षा के माध्यम से बालक की आन्तरिक शक्तियों का वाह्य प्रगटन होता है जिसके लिए शिक्षक अपनी प्रभावी भूमिका निभाता है। शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह बालक को जैविक प्राणी से सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होने में सहायता करता है। इसीलिए शिक्षक की भूमिका को सदैव महत्वपूर्ण व सम्माननीय माना गया है। शिक्षक अपने गुरुत्तर दायित्व का निर्वाह तभी कर सकता है जब उसमें कौशलात्मक गत्यात्मकता, विषय का सम्यक् ज्ञान, अभिव्यक्ति की क्षमता एवं अपने शिक्षक को समुचित नियोजन, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन की दक्षता होती है। ऐसा करने के लिए उसमें समुचित कक्षा शिक्षण व्यवहार की भी अपेक्षा की जाती है। शिक्षा के विविध स्तरों पर शिक्षक के कार्य दायित्व, कार्य निष्पादन एवं कार्योजना में विभेद पाया जाता है। शिक्षा का माध्यमिक स्तर शैक्षिक दृष्टि से अत्यन्त चुनौतीपूर्ण एवं विशिष्ट होता है क्योंकि इस स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सांवेगिक प्रबलता, भावात्मक अस्थिरता, उच्च आकांक्षा एवं अस्थिर मानसिकता पायी जाती है। अतः शिक्षक द्वारा ऐसे कक्षा शिक्षण व्यवहार की अपेक्षा होती है जो शिक्षक गतिविधि को नियोजित तरीके से छात्र मनोभावों के अनुरूप उन्हें पुनर्बलित करते हुए सम्पादित करे। इस विशिष्टता को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध प्रपत्र निर्मित किया गया है जिसमें माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में जौनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं का चयन कर उनकीशिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन किया गया जिसके लिए शिक्षक प्रभावशीलता का ऑकलन करने हेतुप्रो0 प्रमोद कुमार एवं प्रो0 डी0एन0 मुथाद्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार का ऑकलन करने हेतु फ्लैण्डर की कक्षा शिक्षण व्यवहार ऑकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। प्राप्त प्रक्रियाओं के विश्लेषण से यह प्राप्त हुआ कि माध्यमिक स्तर की

---

* शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उ.प्र.
** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ जौनपुर, उ.प्र. सम्बद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर।

शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षकों से उच्च है तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार में शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से अधिक सकारात्मक है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात् शिक्षकों में शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर उच्च होने पर उनका कक्षा शिक्षण व्यवहार अधिक अनुकूल रहता है।

भूमिका :

शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम साधन है और शिक्षक इस शैक्षिक प्रक्रिया का प्रमुख ध्रुव है वह अपने शिक्षक कौशलों के द्वारा शिक्षार्थी की अन्तर्निहित दक्षता एवं प्रतिभा को निखारता है। शिक्षक अपने ज्ञान के आलोक से पूरे समाज को प्रकाशित करता है। शिक्षक द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए दिये गये विशिष्ट योगदान हेतु उसका स्थान आदरणीय और सम्माननीय रहा है। शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता माना जाता है और उसका स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है। शिक्षक की महत्ता व्यक्त करते हुए राधाकृष्णन ने लिखा कि समाज में शिक्षक का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराओं और शिक्षक कौशलों को स्थानान्तरित करते हुए सभ्यता और संस्कृति के प्रकाश को आलोकित करता रहता है।

शिक्षक का दायित्व अत्यन्त गुरूवर एवं महत्वपूर्ण माना जाता है शिक्षकों में अपने शिक्षक वृत्ति के प्रति प्रभावी रूप से समर्पण भाव, कार्य के प्रति निष्ठा, जबाबदेही एवं प्रतिबद्धता एवं शिक्षक प्रभावशीलता एवं विशिष्ट कक्षा शिक्षण व्यवहार उसे विशिष्टता प्रदान करता है। शिक्षक में आदर्श व्यक्तित्व, उत्तम चरित्र, नैतिकता, ईमानदारी उनका कक्षागत व्यवहार उनकी शिक्षक दक्षता, कक्षा शिक्षक के प्रति अनुकूलता तथा विद्यालय, कक्षा एवं विद्यार्थियों के साथ प्रदर्शित विशिष्ट व्यवहार आदि कारक उनके शैक्षिक दायित्वों के निर्वाह में सहायक होते हैं। अतः शिक्षक में ये गुण विशेष रूप से अपेक्षित होते हैं ताकि वह समाज का पथ प्रदर्शन कर सके। शिक्षक ही दीपक की भाँति होता है जो स्वयं के प्रकाश से अपने चारों ओर उजाला फैलाता है किन्तु इसके लिए उसमें सत्यनिष्ठा, ईमानदारी एवं श्रम से कार्य करने रूपी तेल तथा शिक्षक कौशल व प्रभावशीलता रूपी बाती होनी चाहिए।

वर्तमान में शिक्षक व्यवसाय को अत्यन्त उत्कृष्ट एवं प्रभावी माना जा रहा है क्योंकि यह मान–सम्मान के साथ–साथ व्यक्ति के वैयक्तिक हितों का भी संरक्षण करता है किन्तु शिक्षक बनने के पश्चात् लोगों में इसके प्रति पूर्ण निष्ठा, जबाबदेहिता एवं संलग्नता की कमी भी दृष्टिगत होती है जिसका प्रभाव उनकी शिक्षक प्रभावशीलता पर पड़ता है। शिक्षक व्यवसाय को सामाजिक सम्मान के साथ–साथ अनेक तरह की चुनौतियों के सन्दर्भ में भी माना जा सकता है क्योंकि विभिन्न मानसिक, आर्थिक एवं सामाजिक

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कीशिक्षक प्रभावशीलता की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं केकक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कीशिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कीशिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कीशिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सम्बन्ध नहीं है।

अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक शोध के सर्वेक्षण प्रविधि पर आधारित है क्योंकि इसमें माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कीशिक्षक प्रभावशीलता एवं कक्षा शिक्षण व्यवहारका आकलन करने हेतु व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा सूचनाएं संकलित की गयी हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में जौनपुर जनपद में संचालित समस्त अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को लिया गया है। न्यादर्श के रूप में चार माध्यमिक विद्यालयों के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं कुल 50 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। शोध उपकरण के रूप में प्रो0 प्रमोद कुमार एवंडॉ0 डी0एन0 मूथाद्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता मापनी तथा कक्षा शिक्षण व्यवहार हेतु फ्लैण्डर कक्षा शिक्षण व्यवहार आकलन प्रपत्र का प्रयोग किया गया है। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय गणना के रूप में माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं टी–अनुपात का प्रयोग किया गया है।

गणना व विश्लेषण :

प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कीशिक्षक प्रभावशीलता की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–1

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं कीशिक्षक प्रभावशीलता की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	251.15	15.37	11.60	4.22	2.75	0.05 स्तर पर सार्थक
शिक्षिका	25	262.75	14.50				

संचालन व्यवस्थित रूप में करता है, वह विद्यार्थियों के मनोभावों की समझ रखता है, उनकी जिज्ञासाओं की संतुष्टि करता है, उनकी प्रतिपुष्टि के आधार पर अपने शिक्षण का नियोजन एवं अपेक्षित परिवर्तन करता है। वह अपने कक्षा शिक्षण व्यवहार में सकारात्मकता एवं छात्र अनुक्रियाओं को समुचित स्थान प्रदान करता है।

निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य (262.75) शिक्षकों के माध्य (251.15) से अधिक प्राप्त हुआ अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षकों से उच्च है।
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (470.90) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के माध्य (454.40) से अधिक पाया गया अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से उच्च है।
3. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कीशिक्षक प्रभावशीलता व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य उच्च धनात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ अर्थात् शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर उच्च होने पर उनकेकक्षा शिक्षण व्यवहार में उच्च सकारात्मकता रहती है जबकि शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है।

सन्दर्भ :

1. गुप्ता, एस0पी0 (2008) : उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज.
2. चौहान, एस0एस0 (2012) : एडवान्स एजुकेशनल साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.
3. पाण्डेय, के0पी0 (2004) : शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी।
4. भट्टाचार्य, जी0सी0 (2004) : अध्यापक शिक्षा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. सारस्वत, मालती (2004) : शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ.
6. सिंह, अरूण कुमार (2006) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, पटना.
7. सिंह, कर्ण (2004) : शिक्षा के नूतन आयाम, वसुन्धरा प्रकाशन, खीरी लखीमपुर

***

श्रेणियों के बच्चे अध्ययन हेतु प्रवेशित होते हैं जिन्हें नियंत्रित, निर्देशित एवं निपुण बनाने का गुरुतर दायित्व शिक्षक को निर्वाह करना पड़ता है। जिसके लिए उसमें समुचित शिक्षक प्रभावशीलता की अपेक्षा होती है साथ ही साथ उसे अपने कक्षा शिक्षक के दौरान ऐसे व्यवहार की जरूरत होती है जो सभी विद्यार्थियों को अपनी समझ बढ़ाने, जिज्ञासा की संतुष्टि करने एवं बढ़–चढ़कर प्रत्युत्तर करने के लिए अभिप्रेरित करे। शिक्षक, शिक्षक संस्था का केन्द्र बिन्दु एवं शैक्षिक उद्‌देश्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है। राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए अध्यापक में अपने शिक्षक व्यवसाय के प्रति समुचित दृष्टिकोण बनाने, प्रभावशाली शिक्षण करने तथा अपने कक्षा शिक्षण व्यवहार को विषयोचित व छात्रों के अनुरूप बनाने के प्रति केन्द्रित होना चाहिए परन्तु वर्तमान में शिक्षकों में अपने वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक स्थितियों के मध्य समुचित तालमेल स्थापित न कर पाने के कारण विभिन्न प्रकार की विसंगतियाँ दिखायी पड़ती है। शिक्षक बनने के बाद उनमें कार्यशीलता का अभाव व कक्षा शिक्षण व्यवहार में समुचित अनुकूलता न रखने के कारण उनकी शिक्षक प्रभावशीलता घट जाती है तथा वे विद्यार्थियों के मध्य असहजता एवं समस्यानुभूति करते हैं। विद्यार्थी भी उनसे अपनी आशंकाओं एवं जिज्ञासाओं की समुचित संतुष्टि नहीं कर पाते हैं जिसका प्रभाव उनके अधिगम पर पड़ता है। ऐसे अध्यापक अपने विद्यालय, परिवार एवं सामाजिक स्थितियों के साथ समुचित तालमेल भी नहीं रख पाते हैं। इसलिए वे सदैव प्रभावी शिक्षक के रूप में कार्य नहीं कर पाते हैं। शिक्षकों में विभिन्न दक्षताओं के साथ–साथ अधिगम परिस्थितियों के साथ तालमेल स्थापित करने की भी आवश्यकता रहती है जिसके आधार पर वे कक्षा–कक्ष एवं विद्यालयी परिवेश को विद्यार्थियों की रुचि व अपेक्षा के अनुकूल व्यवस्थित कर सकते हैं। स्वयं के शिक्षक का नियोजन एवं प्रभावी सम्प्रेषण कर सकते हैं तथा विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का सहानुभूतिपूर्वक निराकरण भी कर सकते हैं।

वर्तमान में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में व्यापक विभेद देखने को मिलता है। उनमें अपने शिक्षक के नियोजन, क्रियान्वयन, प्रतिपुष्टि एवं ऑकलन सम्बन्धी स्थितियों में भिन्नता दृष्टिगत होती है। कुछ माध्यमिक शिक्षक, शिक्षक प्रभावशीलता रखते हैं जबकि कुछ शिक्षकों में इसे औपचारिक रूप से स्वीकार किया जाता है और वे परम्परागत अध्यापन में ही विश्वास करते हैं। इन कम प्रभावी शिक्षकों से शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता बढ़ाने वाले कारकों का पता लगाकर उन्हें इन गुणों से सम्पन्न बनाया जाना चाहिए जिसके लिए ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाए जिससे वे तनाव मुक्त होकर शिक्षण कार्य कर सकें।

की शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य (470.90) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के माध्य (454.40) से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं का कक्षा शिक्षण व्यवहार शिक्षकों से उच्च है। इसके कारणों में शिक्षिकाओं का विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव होना, उनमें कक्षा–कक्ष सम्बन्धी स्थितियों के प्रति अधिक सजगता व संवेदनशीलता रखना, शिक्षिकाओं की कार्यशैली एवं विद्यार्थियों के आशंकाओं का समुचित निराकरण एवं प्रभावी मार्गदर्शन करना, विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं पर सकारात्मकता रखना तथा शिक्षक गतिविधियों का अनुक्रमिक संचालन करना जबकि शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण गतिविधि को औपचारिक रूप में पूर्ण करना तथा विद्यार्थियों के साथ समुचित जुड़ाव न रखना व उनकी जिज्ञसाओं की समुचित संतुष्टि न हो पाना आदि उनकी कक्षा शिक्षण व्यवहार में कमी का कारण हो सकते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन का तृतीय उद्‌देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन करना है जिसके लिए निर्मित सह–सम्बन्धात्मक परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी संख्या–3

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता व कक्षा शिक्षण व्यवहार में सम्बन्ध का अध्ययन

चर	N	□X	$□X^2$	□Y	$□Y^2$	□XY	r
शिक्षक प्रभावशीलता	50	12848	16507110	23132	14778362	12165680	0.84
कक्षा शिक्षण व्यवहार							

विश्लेषण एवं व्याख्या :

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का योग 12848 तथा उनके प्राप्तांकों के वर्गों का योग 16507110 है जबकि उनके कक्षा शिक्षण व्यवहारके प्राप्तांकों का योग 23132 तथा प्राप्तांकों के वर्गों का योग 14778362 है। माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता व कक्षा शिक्षण व्यवहारके प्राप्तांकों के गुणनफल का योग 12561680 है। प्राप्त सह–सम्बन्ध गुणांक 0.84 है जो उच्च धनात्मक सह–सम्बन्ध गुणांक की श्रेणी में आता है। जिससे यह ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शिक्षकों कीशिक्षक प्रभावशीलता व कक्षा शिक्षण व्यवहार के मध्य उच्च धनात्मक सम्बन्ध होता है। अर्थात् शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर उच्च होने पर उनकेकक्षा शिक्षण व्यवहार में उच्च सकारात्मकता रहती है जबकि शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर न्यून होने पर कक्षा शिक्षण व्यवहार प्रतिकूल हो जाता है। इसके कारणों में शिक्षक प्रभावशीलता का स्तर उच्च होने पर शिक्षक अपने शिक्षण गतिविधियों का

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 251.15 तथा प्रमाणिक विचलन 15.37 है तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं के शिक्षक प्रभावशीलता सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 262.75 व प्रमाणिक विचलन 14.50 है। प्राप्त टी–अनुपात 2.75 है जो 0.05 सार्थकता स्तर परdf48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षिकाओं कीशिक्षक प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर दिया गया। चूंकि माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता के प्राप्तांकों का माध्य (262.75) शिक्षकों के माध्य (251.15) से अधिक है। अतः माध्यमिक स्तर की शिक्षिकाओं की शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षकों से उच्च है। इसके कारणों में शिक्षिकाओं द्वारा अपने शिक्षण कार्य का नियोजन करने, भावात्मकता के कारण विद्यार्थियों के मनोभावों की समझ रखने, उन्हें प्रभावी रूप से अभिप्रेरित करने, विद्यार्थियों से जुड़ाव के कारण उन्हें शिक्षण गतिविधियों में संलग्न रखने, उनकी आशंकाओं एवं जिज्ञाशाओं को शान्त करने के कारण अपने शिक्षण आयोजन को रूचिकर व प्रभावी बनाने जबकि शिक्षकों द्वारा औपचारिक रूप में शिक्षण गतिविधि सम्पादित करने के कारण विद्यार्थियों में रूचि व अधिगम का सम्यक् विकास न कर पाने की स्थिति दृष्टिगत हुई।

प्रस्तुत अध्ययन का द्वितीय उद्‌देश्य उद्‌देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना करना है। इसके लिए निर्मित परिकल्पना के सापेक्ष संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण इस प्रकार है–

सारणी संख्या–2

माध्यमिक स्तर के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार की तुलना

चर	N	M	S.D.	D	σD	t-ratio	सार्थकता
शिक्षक	25	454.40	16.20	16.50	4.66	3.54	0.05 स्तर पर सार्थक
शिक्षिका	25	470.90	16.80				

उक्त तालिकानुरूप माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 454.40 तथा प्रमाणिक विचलन 16. 20 है तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का माध्य 470.90 व प्रमाणिक विचलन 16.80 है। प्राप्त टी–अनुपात 3.54 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर df48 के लिए टी–सारणीमान 2.63 से अधिक है जो सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के शिक्षकों व शिक्षिकाओं के कक्षा शिक्षण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है को अस्वीकृत कर दिया गया। चूंकि माध्यमिक स्तर